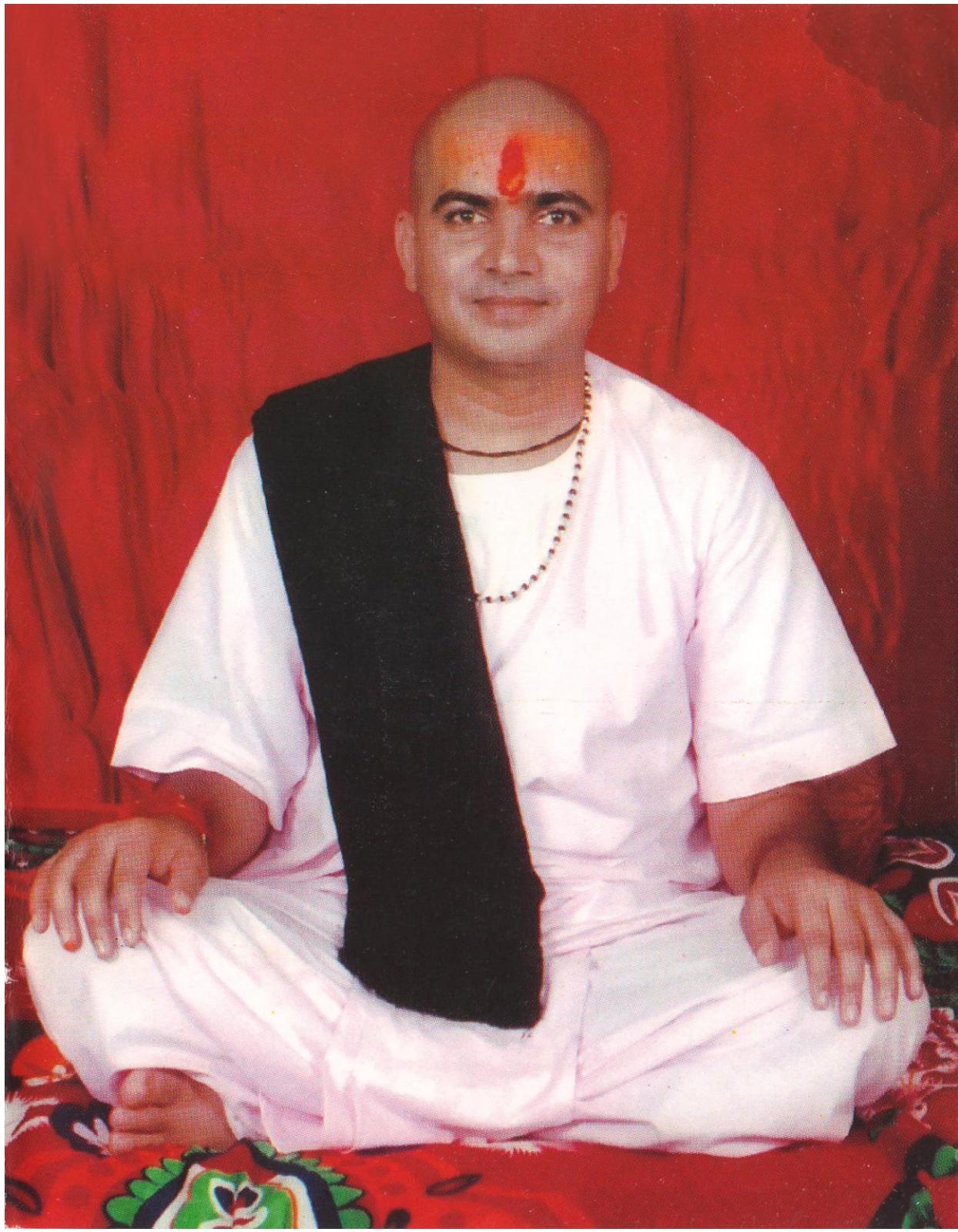


॥ श्रीराम जी ॥

अमूल्य शिक्षा



रामनेही सत् श्री रामप्रसाद जी महाराज





ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

नम्र नियेदन

प्रस्तुत पुस्तक में रामसनेही सन्ता
श्री रामग्रसाद जी महाराज द्वारा सत्संग
भवन सरदारपुरा एवं रामसनेही सत्संग केन्द्र,
नागौरी गोट के अन्दर, जोधपुर में चातुर्मास्य
सत्संग सं. २०६५ के अवसर पर किये गये
कुछ विशेष: - तत्त्व - चिन्ताभणि,
श्रीभगवताभृत पुस्तक के प्रबचन एवं
समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रबचनों का संग्रह
किया गया है। ये प्रबचन सभी के लिये
उपयोगी हैं। भगवत्प्रेमी भाई-बहनों से मेरा
नियेदन है कि ये इनका अध्ययन-मनन करके
लाभ उठाने की चेष्टा करें।

विनीत

प्रकाशक

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

विनय

मैं न तो कोई विद्वान हूँ और न अपने
को उपदेश आदेश और शिक्षा देने का
अधिकारी ही समझता हूँ तथापि चातुर्मास
सत्संग समारोह के अन्तर्गत भगवत् चरणों में
परमात्मा के गुण प्रभाव और रहस्य की
बातों का चिन्तन मनन करने का सौभाग्य
प्रभु चरणों में प्राप्त हुआ।

उन भगवद् भावों का एवं सत्संग के
सुवासों का संग्रह प्रभु चरणों में समर्पित
है।

साधु रामप्रसाद रामस्नेही

प्रार्थना

राम राम महाराज,

आदर्शी महाराज,

अन्तर्यामी,

शरणे आयोरी लाज

गरीब निवाज,

पतित पावन,

अधमउधारण,

मैं अपराधी ।

आपरे शरणे आयो हूं,

रक्षा करो,

राम राम महाराज ॥

—एसमहंस श्री अभ्युराज जी महाराज

—www.samskritamahabharat.org—



प्रार्थना

हे नाथ ! आपसे मेरी प्रार्थना है
कि आप मुझे प्यारे लगें। केवल यही
मेरी माँग है, और कोई माँग नहीं ।

हे नाथ ! अगर मैं स्वर्ग चाहूँ तो
मुझे नरक में डाल दें, सुख चाहूँ तो
अनन्त दुःखों में डाल दें, पर आप
मुझे प्यारे लगें ।

हे नाथ ! आपके बिना मैं रह न
सकूँ, ऐसी व्याकुलता आप दे दें ।

हे नाथ ! आप मेरे हृदय में ऐसी

आग लगा दें कि आपकी प्रीति के
यिना मैं जी न सकूँ ।

हे नाथ ! आपके यिना मेरा कौन
है ? मैं किससे कहूँ और कौन सुने ?

हे मेरे शरण्य ! मैं कहाँ जाऊँ ?
कोई मेरा नहीं ।

मैं भूला हुआ कड़वों को अपना
मानता रहा । उनसे धोखा खाया,
फिर खा सकता हूँ, आप बचायें ।

हे मेरे प्यारे ! हे अनाथनाथ ! हे
अशरणशरण ! हे पतितपावन ! हे
दीनद्यन्धो ! हे अरक्षितरक्षक ! हे
आत्माणपरायण ! हे निराधार के
आधार ! हे अकारणकरणात्मय ! हे

जीवन्ति जीवन्ति जीवन्ति जीवन्ति जीवन्ति

श्रीरामचन्द्रोऽग्निरुद्रिणी ॥ श्रीराम ॥ श्रीरामचन्द्रोऽग्निरुद्रिणी ॥
प्रभो ! ब्राह्मि माम् ! ब्राह्मि माम् !
याहि माम् ! याहि माम् !! हे प्रभो !
 हे विभो ! मैं आँखा पसारकर देखता
 हूँ तो मन-बुद्धि-प्राण-इन्द्रियों और
 शरीर भी मेरे नहीं हैं, फिर बस्तु-
 लब्धिकि आदि मेरे कैसे हो सकते हैं।
 ऐसा मैं जानता हूँ, कहता हूँ, पर
 बास्तविकता से नहीं मानता। मेरी
 यह दशा क्या आपसे किन्तु भाग भी
 कभी हिली है? फिर हे प्यारे ! क्या
 कहूँ ! हे नाथ ! हे नाथ !! हे मेरे
 नाथ!! हे दीनधन्धो ! हे प्रभो! आप
 अपनी तरफ से शरण ले लें। बस,
 केवल आप प्यारे लगें ।

श्रीरामचन्द्र

श्रीरामचन्द्रोऽग्निरुद्रिणी ॥ श्रीराम ॥ श्रीरामचन्द्रोऽग्निरुद्रिणी ॥

ॐ शत्रुघ्नीं शत्रुघ्नीं शत्रुघ्नीं शत्रुघ्नीं शत्रुघ्नीं शत्रुघ्नीं

नित्य पठनीय गीताजी के पाँच श्लोक

अजोऽपि सद्व्यवहारमा भूतानामीस्तरोऽपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायथा ॥

मैं अजन्मा और अविनाशी-स्वरूप होते
हुए भी तथा सम्पूर्ण प्राणियों का ईश्वर होते हुए,
भी अपनी प्रकृति को अधीन करके अपनी
योगमादा से प्रकट होता हूँ ।

यदा यदा हि धर्मस्य म्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सुजाम्यहम् ॥

हे भरतवंशी ! जब-जब धर्म की
हानि और अधर्म की बढ़ि होती है, तब-
तब ही मैं अपने-आपको साकाररूप से
प्रकट करता हूँ ।

परिप्राणाय साधूनां विनाशाय च तुष्टुलाम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

साधुओं- (भक्तों) की रक्षा करने के
लिये, पापकर्म करनेवालों का विनाश करने

करने के लिये इन श्लोकों का उपयोग करें ।

के लिये और कर्म की भली-भांति स्वापना करने के लिये मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

जन्म कर्म च ये दिव्यमेत्य यो वेत्ति तत्त्वतः ।
स्वप्नया देहं पुनर्जन्म वैति मामेति सोऽर्जुन ॥

हे अर्जुन ! मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। इस प्रकार (मेरे जन्म और कर्म को) जो मनुष्य तत्त्व से बान लेता अर्थात् दृढ़तापूर्वक बान लेता है, वह शरीर का त्याग करके पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता, प्रत्युत मुझे प्राप्त होता है।

वीतरागभद्रक्रोधा मनमया मामुपाक्षिता: ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्वायमानता: ॥

राग, भय और क्रोध से सर्वथा रहित, मेरे मैं ही तल्लीन, मेरे ही आश्रित तथा ज्ञानरूप तप से पवित्र हुए बहुत-से भक्त मेरे भाव-(स्वरूप) को प्राप्त हो चुके हैं।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री हनुमते गणेशाय नमः ॥
पूर्व स्वामीजी श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीभूख मे

सत्सङ्ग की आवश्यकता क्यों ?

मनुष्य-शरीर केवल परमात्मा की प्राप्ति के लिये मिला है, किन्तु भूल के कारण अपने उद्देश्य से विमुख होकर, धन, मान, बड़ाई आदि जाग्रावान् पदार्थों की प्राप्ति में इस अमूर्त्य निष्ठि का दुरुपयोग करने लगा और इसी से इसने ८४ लाख बोनि एवं नरकों की सैयारी कर ली। इस महत्वी विषय से बचने का अत्यन्त सुगम उपाय सत्सङ्ग है सत्सङ्ग मिलने पर मनुष्य-जन्म का उद्देश्य पहचान में आ जाता है। तभी भूला-भटका मानव परमात्मा की ओर बढ़ता है।

अतः सांसारिक उलझनों को सुलझाने के लिये सत्सङ्ग परम आवश्यक है।

श्री गणेशाय
नमः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

राम राम राम राम ॥ श्री रामि ॥ राम राम राम राम ॥

राम के नाम से.....



भगवान् के दिव्य उपदेश

ज्ञान के मूल केन्द्र भगवान ही हैं, वे ही ज्ञानदाता तथा ज्ञान के स्वरूप हैं। खिल्लि में जितना भी ज्ञान है, वह उनकी ही कृपा का प्रसाद है। जहाँ भगवान् नहीं, वहाँ अज्ञान है। जो ज्ञान भगवान् की ओर नहीं ले

राम राम राम राम ॥ (II) राम राम राम राम ॥

जाता और जो ज्ञान भगवान् के द्वारा प्रवृत्त नहीं हुआ है, उसे ज्ञान मानना ही भ्रम है। यह तो जीव को अन्धकार एवं मृत्यु के महान् कष्टों की ओर ले जानेवाला अज्ञान है।

भगवान् ही सबके परम गुरु हैं। वे सबके हृदय में ही निवास करते हैं। जो मनको एकाश करके उन अनायासी हृदयस्थ परमात्मा में चिन्ता को स्थगाता है, उसके अज्ञान का पदां दूर हो जाता है। उसे अपने हृदय में ही प्रकाश का अपार भण्डार प्राप्त हो जाता है।

भगवान् अपने परम प्रिय भक्तों को समय-समय पर उपदेश भी करते हैं।

है। भगवान् के भक्त तो अपने उन प्रेमास्पद को प्राप्त किये होते हैं। उन्हें स्वयं किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं होती। ये तो सम्पूर्ण दोषों से रहित भक्ति-ज्ञान-धैर्य से पूर्ण उपदेश की मूर्ति ही होते हैं; किन्तु अपने ऐसे निर्मल भक्तों को निमित्त बनाकर भगवान् संसार के ताप से तप्त प्राणियों को उपदेश करते हैं।

भगवान् के उपदेशों को हृदय में बैठाकर, उनके अनुसार आचरण करके मनुष्य परम कर्त्त्याण को प्राप्त कर सकता है।

श्री वृद्ध गुरु

देवताओं की जीवनी और उनकी उत्तमता

ॐ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥



सत्यपुरुष और उनके सङ्गका प्रभाव

संत, महात्मा, भक्त— यह तीनों ही एक भाव के तीन शब्द हैं। संसार में संतों का स्थान सबसे ऊँचा है। देवता, मनुष्य सभी सच्चे संतों को अपने से बदलकर मानते हैं। संत का ही जीवन सार्थक होता है। महात्माओं में कठोरता, वीर और द्वेष का तो नाम ही नहीं रहता। ये इतने

दयालु होते हैं कि दूसरे के दुःख को
देखकर उनका हृदय पिघल जाता है।
ले दूसरे के हित को अपना हित
समझते हैं। जैसे भगवान् की अहंतु
की दया समस्त जीवों पर है— इसी
प्रकार महापुरुषों की अहंतु की दया
सब पर होती है। भक्तों की कोई
कितनी ही बुराई क्यों न करें, बदला
लेने की इच्छा तो उनके हृदय में होती
ही नहीं। अगर कहीं बदला लेने की-
सी क्रिया देखी जाती है तो वह भी
उसके दुर्गुणों को हटाकर उसे विशुद्ध
करने के लिये ही होती है। इस क्रिया
में भी महात्माओं की दया छिपी
रहती है। उन पुरुषों के दर्शन, भाषण,

०३०३०३०३०३०३०३००॥ श्री हरि ०३०३०३०३०३०३०३००॥
स्पर्श और चिन्तन में भी मनुष्य उनके
दयाभाव को देखकर मुग्ध हो जाता
है। महात्माओं के चरण जहाँ टिकते
हैं, वह भूमि पावन हो जाती है।
आजतक जितने तीर्थ बने हैं, वे सब
परमेश्वर और भगवद्गत्तों के निमित्त से
ही बने हैं। भगवान् के भक्तों की
महिमा अनन्त और अपार है। श्रुति,
स्मृति, इतिहास-पुराण आदि में
जगह-जगह उनकी महिमा गायी गयी
है, किंतु उसका किसीने पार नहीं
पाया। बास्तव में भक्तों की तथा
उनके गुण-प्रभाव और सङ्ग की
महिमा कोई वाणी के द्वारा गा ही
नहीं सकता। शास्त्रों में जो कुछ कहा

* सबसे उत्तम बात ईश्वर की शरणागति है। भक्त जिस भाव से भगवान को भजता है भगवान उसी प्रकार से साधक को संसार बन्धन से मुक्त कर देते हैं। भगवान के प्रेमी भक्तों को हर बल्क भगवान की दया का दर्शन होता रहता है। भगवान का सच्चा प्रेमी बही है जो भगवान की आङ्गा के अनुसार चलता है।

◀ कलिकाल में भगवान की लीला कथा श्वरण से तुष्णा की निवृत्ति एवं अन्तःकरण की शुद्धि होती है और प्रभु चरणों

॥७७७७७७७७७७७७॥ ॥ श्री हरि ॥ ॥७७७७७७७७७७७७७७७॥

की भक्ति जागृत होती है। *

मनुष्य को प्राणी मात्र की सेवा करनी चाहिए। अपने से जो बड़े हैं, पूज्य है, दुःखी हैं, लाचार हैं उनकी सेवा का विशेष महत्व है। सेवा का इतना भारी प्रभाव है कि उससे भगवान् अपने आप मिल सकते हैं। इसलिए तन-मन-धन से दीन-दुखियों की, माता-पिता, गुरुजनों आदि सबकी सेवा करनी चाहिए। कोई भी मिल जाए तो उसे देखकर प्रसन्न होना चाहिए। प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। यथाशक्ति सबकी सेवा-

॥७७७७७७७७७७७७॥ [८२] ॥७७७७७७७७७७७७७७७॥

॥७७७७७७७७७॥ ॥ श्री हरि ॥७७७७७७७७७७७७॥

सहायता करनी चाहिए।
सेवाभाव ही श्रेष्ठ भजन है।

● मनुष्य को सदैव कुसंग का
त्याग करना चाहिए। विषयी
पुरुषों का संग करने से ही
जीवन में मलीनता आती है।
भगवान् भक्तों के निर्मल
अन्तःकरण में ही प्रकट होते हैं।
मनुष्य को सावधान होकर
सद्ग्रन्थों के बताए पथ का
अनुसरण करना चाहिए।

● श्रद्धा से शांति मिलती है। जहाँ
श्रद्धा नहीं है वहाँ शांति नहीं है
और जहाँ शांति नहीं है वहाँ

॥७७७७७७७७७७७७॥ [८३] ॥७७७७७७७७७७७७॥

॥७७७७७७७७७७॥ श्री हरि ॥७७७७७७७७७७॥
सुख नहीं हैं। शास्त्रों में त्याग से
शांति बतायी गयी है।

● भगवान को याद रखने से सहज
में कल्याण हो सकता है।
भगवान सर्वशक्तिमान है,
सर्वगुण सम्पन्न है, संसार में
भगवान के सिवाय कुछ नहीं
है। संसार में अनायास जो कुछ
हो रहा है, उसमें प्रत्येक क्रिया
में भगवान की दया देखनी
चाहिए। काम करते हुए या
एकान्त में ज्यादा समय भजन-
ध्यान में बिताना चाहिए।

● मानव का कल्याण ईश्वर प्राप्ति
॥७७७७७७७७७७७॥ [८] ॥७७७७७७७७७७७७७॥

॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥

से होता है और ईश्वर की प्राप्ति
कथाओं के सुनने से होती है ।

● रूपए पैसों को हम तिजौरी में
बंद करके रख सकते हैं, लेकिन
समय को नहीं रोक सकते ।
बीता हुआ समय वापस नहीं
मिल सकता है । संसार में उसी
व्यक्ति का जीवन सार्थक है जो
अपने जीवन में समय की
महत्वता को समझता है ।

● साधक को उन्नत जीवन जीने के
लिए आलस्य प्रमाद का त्याग
करना चाहिए । माता-पिता व
गुरुजनों की कभी भी अवहेलना

॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥

॥७॥८॥९॥१०॥११॥ ॥ श्री हरि ॥ ॥७॥८॥९॥१०॥११॥

नहीं करनी चाहिए। मनुष्य को
अपने कर्तव्य कर्म का ठीक से
पालन करना चाहिए। और हर
समय प्रसन्न रहना चाहिए।
मनुष्य जीवन स्वभाव सुधारने
का सुन्दर मौका है।

॥१॥ ईश्वर सबकी आत्मा में विराज-
मान है, सदाचारी - दुराचारी
सबमें ईश्वर है इसलिए किसी से
घृणा है उनको सुधारने का
प्रयत्न करना चाहिए। जो
अनन्य भाव से प्रभु चरणों का
आश्रय प्राप्त कर लेता है वह
प्रभु की दया प्राप्त कर लेता है।

॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥ ८६ ॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥

॥७॥८॥९॥१०॥१॥॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥ श्री हरि ॥७॥८॥९॥१०॥१॥॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥

● मनुष्य को साधन मार्ग में सबसे पहले अपने मन को एकाग्र करना चाहिए। मन को वश में करने के दो उपाय शास्त्रों में बतलाए गए हैं- अभ्यास व वैराग्य। एक ही गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए अनेक मार्ग हुआ करते हैं ऐसे ही प्रभु प्राप्ति के लिए अनेकों साधन हैं लेकिन सब साधनों का सार केवल प्रभु प्राप्ति है।

● जब तक जीवन अज्ञान से मुक्त नहीं होता है तब तक वह सांसारिक बंधनों में बंधा हुआ

॥७॥८॥९॥१०॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥

॥४७॥४८॥४९॥५०॥ ॥ श्री हरि ॥ ५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥५०॥

सुख-दुःख भोगता है। जब सत्संग से जीव को तत्वानुभूति हो जाती है तब वह सहज ही सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। प्रकृति के दो भेद हैं एक विद्या दूसरा अविद्या। विद्या के द्वारा परमात्मा संसार की रचना करते हैं अविद्या के द्वारा जीव संसार में मोहित होता है।

ॐ मनुष्य यदि अपने जीवन में किए गए शुभ कार्य भगवान् को अर्पण कर देता है तो वे सभी भागवत धर्म हो जाते हैं।

॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥५०॥

॥७७८८९९८८७७६६७७॥ श्री हरि ॥ ॥७७८८९९८८७७६६७७॥
परमात्मा सबके हृदय में
विराजमान है ।

○ मनुष्य संसार में जितनी वस्तुओं
को अपनी मानता है उतना ही
वह उनके पराधीन हो जाता है ।
परन्तु परमात्मा को अपना मानने
से वह स्वाधीन हो जाता है ।
संसार मात्र परमात्मा का है पर
जीव भूल से परमात्मा की
वस्तुओं को अपनी मान लेता है
इसलिए वह बंधन में पड़ जाता
है ।

○ त्याग से जो शांति मिलती है
उसकी कोई बराबरी नहीं कर

॥८८९९८८९९८८७७६६७७॥ [८९] ॥८८९९८८९९८८७७६६७७॥

॥७४८९८८७८८८८॥ श्री हरि ॥ ॥७४८९८८७८८८८॥

सकता । जहाँ शांति है, वहाँ
 सुख है, वैभव है, समृद्धि है
 और भगवान का वास है ।
 इन्द्रियों को वश में रखें तो
 स्वतः ही त्याग की भावना
 उत्पन्न हो जाए । ऐसे में दुःख
 का कोई कारण नहीं रहता ।

॥८५॥ लाल छि लालाल छाल
 स्मृति लाल लालाल छाल स्मृति
 कि लालाल छि लाल लाल
 लाल छाल छि लालाल छाल प्रलीमह
 ॥८६॥

डि लिलमि लिंगु छि लि लाल ॥
 नक छिल लिलाल कैरक लिलम

॥८७॥८८८८८८८८॥ १० ॥८७॥८८८८८८८८॥

॥७०७०७०७०७०७०॥ श्री हरि ॥ ७०७०७०७०७०७०७०
 विषय-विलास-विमोह-विनाशिनी ।
 विमल विराग विवेक-विकाशिनि ।
 भगवत्तत्व-रहस्य प्रकाशिनि ।
 परम् ज्योतिपरमात्म-ज्ञान की ॥ १५ - आरती ॥

परमहंस-मुनि-मन उल्लासिनि ।
 रसिक-हृदय रस-रास-विलाशिनि ।
 भक्ति, मुक्ति रतिप्रेम सुदासिनि ।
 कथा अकिंचन प्रिय सुजान की ॥ १६ - आरती ॥

॥१६-आरती ॥ १६ - आरती ॥
 । गीती-गीत-गीत-गीत-गीत-गीत-गीत
 । गीती-गीत-गीत-गीत-गीत-गीत-गीत-गीत
 ॥१६-आरती ॥ १६ - आरती ॥

॥००००००००००००॥ ॥ श्री हरि ॥ ॥००००००००००००॥

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे,
प्रभु ! जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें
॥३५ जय ॥

जो ध्यावे फल पावे,
दुःख विनसे मन का ॥ प्रभु ॥
सुख सम्पत्ति घर आवे,
कष्ट मिटे तन का ॥३६ जय ॥
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी
॥प्रभु ॥

तुम बिन और न दुजा,
आस करूँ जिसकी ॥३७ जय ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे
॥३८ जय ॥

॥००००००००००००॥ [३] ॥००००००००००००॥

॥७८७९७८७९७९७९॥ श्री हरि ॥७८७९७८७९७९७९
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
॥ प्रभु ॥

श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओं, सन्तन की सेवा
॥ॐ जय ॥

तन-मन-धन सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा
॥ॐ जय ॥

ओइम् जय जगदीश हरे,
प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें
॥ॐ जय ॥

॥ उत्तरा ॥

॥ ऊहु ॥ पर्वि ननी मृग
॥ झल घंडा ॥ किसली लैक मार्द
की इए प्राहु, फिलहाल आहु मिर्द
॥ झल घंडा ॥

॥७८७९७८७९७९७९७९ [१४] ॥७८७९७८७९७९७९

॥३७३८३९३०॥ श्री हरि ॥३७३८३९३०॥

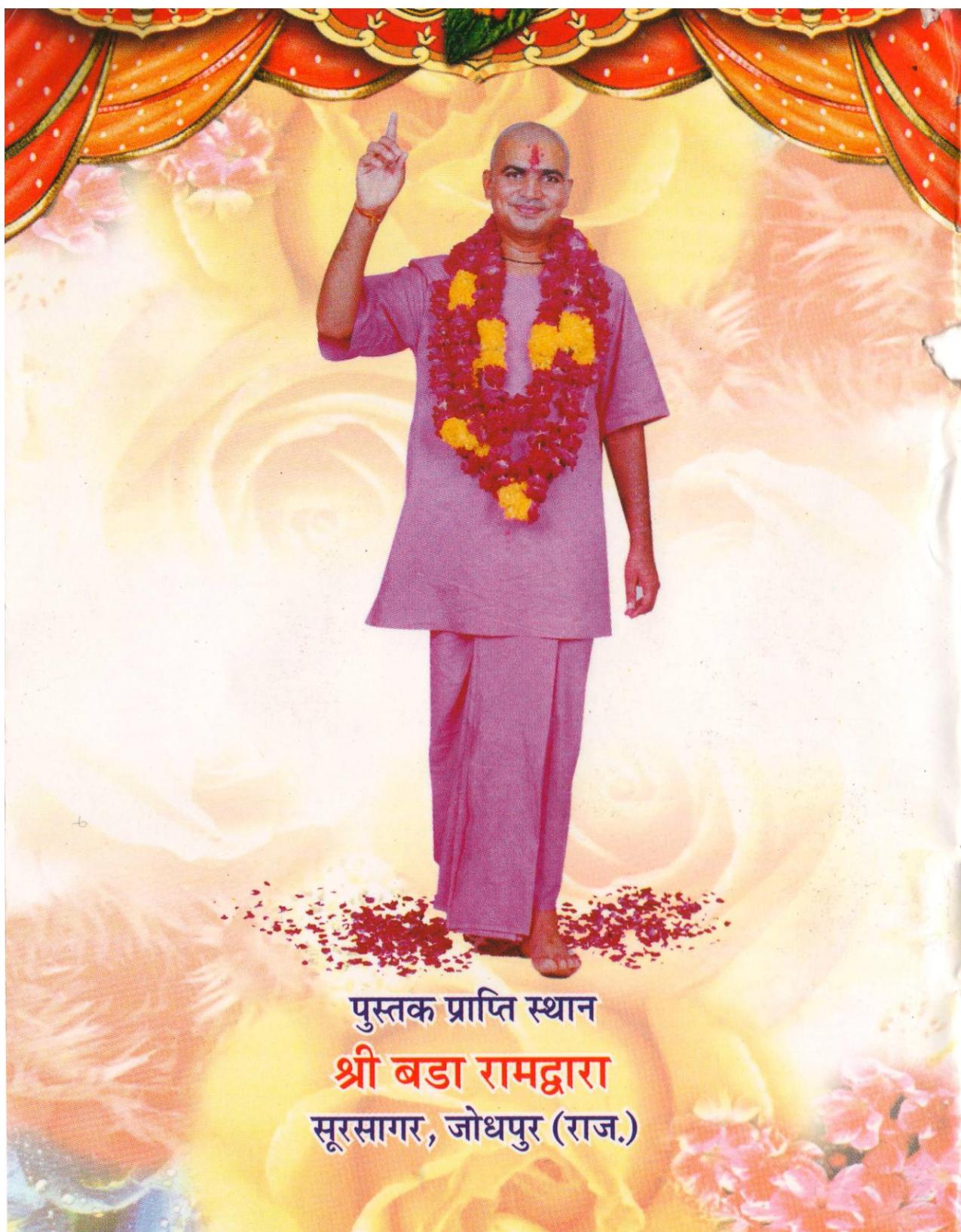
सन्त श्री रामप्रसादजी का परिचयः

भारत भूमि सदैव ऋषि-मुनियों तपस्वीजनो, सन्तों के प्रादुर्भाव से स्वयं को सुशोभित करती रही है। जो भी सन्त-मनीषी यहाँ हुए वे अपने आपमें एक युग ही थे। वर्तमान में सन्त रामप्रसाद जी लोगों की आध्यात्मिक शान्ति के लिए इस मारवाड़ क्षेत्र में भक्ति प्रचार हेतु तत्पर हैं। भोपालगढ़ तहसील के बागोरिया ग्राम में जन्मे सन्तजी बाल्यकाल में ही गुरु कृपा से बड़ारामद्वारा सूरसागर में आ गये थे पूज्यश्री मोहनदास जी महाराज ने गुरुदीक्षा प्रदान की। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुजणों के सानिध्य में सूरसागर की ही प्राथमिक पाठशाला में हुई। दरबार संस्कृत कॉलेज, जोधपुर से आपने संस्कृत माध्यम में प्रवेशिका उपाध्याय आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप उच्च शिक्षा हेतु बीकानेर, जयपुर, बनारस आदि स्थानों पर

॥३७३८३९३०॥३५॥३७३८३९३०॥

॥७७७७७७७७७॥ ॥ श्री हरि ॥७७७७७७७७७७७७॥
अध्ययन किया । शिक्षा अध्ययनोपरान्त आप
अपनी कर्मस्थली जोधपुर में ही रहे । यहाँ आपने
श्रीमद् भागवत-महापुराण का विस्तृत अध्ययन
किया । आपने श्री भागवत जी की कथा को
प्रथम बार गुरुचरणों में समर्पित किया और इस
अनंत यात्रा में निकल पड़े जो अनवरत है । इस
पुस्तक के छपने तक आप जोधपुर एवं राजस्थान
के अन्य छोटे-बड़े नगरों के अतिरिक्त भारतवर्ष
के अनेकों तीर्थस्थलों एवं शहरों में भागवत कथा
वाचन तकरीबन ७२३ बार कर चुके हैं । आप
आध्यात्मिक जन-जागरण की एक लहर फैला रहे
हैं । आपकी कथा शैली ओजस्वी एवं कथा का
माध्यम हिन्दी तथा मारवाड़ी भाषा में होता है ।
अपनी मृदु स्वर लहरियों में संगीतमय वातावरण
में जब आप कथा करते हैं तो जन मानस आनंद
विभोर हो जाता है । आपकी पीयूष पूरित वाणी
ज्ञान की सरिता बहाती रहती है ।

॥७७७७७७७७७७७७॥ १६॥ ॥७७७७७७७७७७७७॥



पुस्तक प्राप्ति स्थान
श्री बडा रामद्वारा
सूरसागर, जोधपुर (राज.)